पाहि जगज्जननि पाहि माम्

रागं: हंसानन्दि (५३) ताळं: आदि

श्री स्वाति तिरुनाळ् महाराजा विरचिता

पल्लवि

पाहि जगज्जननि पाहि मां
करुणया पङ्केरुहनयने

अनुपल्लवि

वाहिनीधवसुते वितर कुशलमयि
देहि तावकसेवां मोहनदामे रमे

चरणम्

शारदहिमकर समरुचि सुवदने मणिमयभुषणराजिते
नारद शौनक गौतम कुंभज कौशिक मुनिसन्नुते
सारसपदनत घनसुखदायिनि काञ्चनसम तनुराजिते
तरसा मामव कृपया जननी परिमळ पुष्पसुवासिते
द्विरदार्पितकमले विधृतकस्ले विगतशमले गुणशीले ॥ १ ॥

कोमळहासविलासिनि मामव बालनिशारमणाळिके
सामजपुङ्गव चारु सुगामिनि वसनविनिन्दित हाटके
मम हृदि परिलस दिनमनु परिहृतसात्वत समुदयपालिके
हेमघटोपम चारुकुचेऽम्बुजनिरुपम विलसितमालिके
कामजननि कमले हरिविलोलसुरुचिरशीले नतसाले ॥ २ ॥

निरुपमसुन्दरि भक्तजनामलकल्पकवल्लरि अम्बिके
सुगुणमौलि विराजित पदयुगळे भुवनत्रयनायिके
विरचय शुभमयि तिलसुम मदहर मोहनतर निजनासिके
नीरजनाभ सुवल्लभे नूतन नीरदकान्ति समाळके
सारसकृतनिलये परमसदये विधृतवलये मुनिगेये ॥ ३॥